

भारत में बढ़ती मुद्रास्फीति

प्रलम्ब के लिये:

[उपभोक्ता मूल्य सूचकांक](#), [उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक](#), [भारतीय रज़िर्व बैंक](#), [खाद्य मुद्रास्फीति](#), [हीटवेव](#), [केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय](#)

मेन्स के लिये:

मुद्रास्फीति का आर्थिक प्रभाव, मौद्रिक नीति और मुद्रास्फीति प्रबंधन

[स्रोत: पी.आई.बी](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय \(MoSPI\)](#) ने बताया कि [उपभोक्ता मूल्य सूचकांक \(CPI\)](#) या खुदरा मुद्रास्फीति अक्टूबर 2024 में बढ़कर 6.2% हो गई और [उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक \(CFPI\)](#) के अनुसार खाद्य मुद्रास्फीति बढ़कर 10.87% हो गई।

- यह अगस्त 2023 के बाद से सबसे अधिक मुद्रास्फीति दर है, जो [भारतीय रज़िर्व बैंक \(RBI\)](#) की 6% की ऊपरी सहन सीमाओं को पार कर गई है।
- वैश्विक मुद्रास्फीति में कमी के बावजूद, भारत नरितर मूल्य दबाव का सामना कर रहा है, जिससे वशेषज्ज पूरवानुमानों और ब्याज दर प्रभावों का पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं।

भारत में उच्च खुदरा मुद्रास्फीति के लिये कौन-से कारक ज़म्मेदार हैं?

- उच्च खाद्य मुद्रास्फीति:** इस वृद्धि में [खाद्य मुद्रास्फीति](#) का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जो 15 महीने के उच्चतम स्तर 10.8% पर पहुँच गई।
 - सबजियों की कीमतों में 42% की वृद्धि हुई, जो 57 महीने का उच्चतम स्तर है। फलों की कीमतों में 8.4% की वृद्धि हुई और दलहनों में 7.4% की वृद्धि देखी गई।
- कोर मुद्रास्फीति में वृद्धि:** [कोर मुद्रास्फीति](#) जिसमें खाद्य और ईंधन की कीमतें शामिल नहीं हैं, में भी वृद्धि हुई है, जो खाद्य के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी मुद्रास्फीति के दबाव का संकेत देती है।
 - घरेलू सेवाओं में मुद्रास्फीति बढ़ रही है, जो जीवन-यापन की बढ़ती लागत को दर्शाती है।
- वैश्विक मूल्य अस्थिरता: आपूर्ति में व्यवधान और अन्य अंतरराष्ट्रीय बाज़ार कारकों** के कारण वैश्विक [खाद्य तेल](#) की कीमतों में तीव्र वृद्धि ने भारत की मुद्रास्फीति को सीधे प्रभावित किया है।
 - चूँकि [भारत खाद्य तेलों का एक प्रमुख आयातक है](#), इसलिये वैश्विक कीमतों में किसी भी वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उपभोक्ताओं के लिये लागत बढ़ जाती है, जिससे [खाद्य मुद्रास्फीति में योगदान होता है](#)।
- चरम मौसमी घटनाएँ:** [हीटवेव](#) ने फसल की पैदावार पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, जिससे आपूर्ति में कमी आई है और कीमतें बढ़ी हैं।

RBI की मौद्रिक नीति पर उच्च खुदरा मुद्रास्फीति के क्या प्रभाव होंगे?

- ब्याज दरों में कटौती में देरी:** RBI का [मुद्रास्फीति लक्ष्य 4% है](#), जिसमें 2% से 6% बीच की मुद्रास्फीति को अनुकूल माना गया है। मुद्रास्फीति इस लक्ष्य से अधिक होने पर, ब्याज दरों में तत्काल कटौती की संभावना नहीं है।
 - [वशेषज्जों का अनुमान है कि यदि मुद्रास्फीति में नरितर गिरावट आती है तो](#) RBI वर्ष 2025 में दरों में कटौती पर वचिर कर सकता है।
- मुद्रास्फीति नियंत्रण पर ध्यान:** RBI मूल्य स्थिरता बनाए रखने के लिये मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने को प्राथमिकता देना जारी रखेगा, क्योंकि अनियंत्रित मुद्रास्फीति आर्थिक विकास और कर्य शक्त को कमजोर करती है।
 - RBI ने अनुमान लगाया था कि वित्त वर्ष 2024-25 की तीसरी तमिाही में मुद्रास्फीति 4.8% और चौथी तमिाही में 4.2% तक कम हो जाएगी, लेकिन अब इसकी संभावना कम लगती है, जिससे ब्याज दरों के भवषिय के अनुमान पर असर पड़ सकता है।

- **RBI की नीतितगत दुवधि:** RBI के सामने एक कठनि नरिणय है, उसे मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाना है, साथ ही **आर्थिक विकास को भी रोकना है** । खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतें और आपूर्ति में व्यवधान मुद्रास्फीति में प्रमुख योगदानकर्ता हैं, जो नीतितगत नरिणयों को जटिल बनाते हैं ।
 - लगातार मुद्रास्फीति के दबाव को देखते हुए, **RBI सतर्क रुख अपना सकता है**, ब्याज दरों को समायोजित करने से पहले मुद्रास्फीति में गरिवट का इंतजार कर सकता है । वैकल्पिक रूप से यह एक **सख्त मौद्रिक नीति लागू कर सकता है**, जो मुद्रास्फीति को नरिणय करने के साथ-साथ **आर्थिक विकास को भी प्रभावित कर सकती है** ।
- **अनरिणय मुद्रास्फीति के संभावित जोखिम:** RBI ने कहा कि नरिणय मुद्रास्फीति वास्तविक अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से उद्योग और नरियात को कमजोर कर सकती है ।
- यदि बढ़ती इनपुट लागत का बोझ उपभोक्ताओं पर डाला जाता है, तो इससे उपभोक्ता मांग कम हो सकती है और **स्कॉर्पोरेट आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है** ।
- इसका विशेष रूप से वनरिमाण जैसे क्षेत्र पर प्रभाव पड़ सकता है, जो **स्थिर इनपुट लागत और मार्जनि पर नरिभर करते हैं** ।

नोट: भारत सरकार और RBI के बीच **मौद्रिक नीति रूपरेखा समझौते (Monetary Policy Framework Agreement- MPFA)** का उद्देश्य विकास पर वरिणय करते हुए **मूल्य स्थिरता बनाए रखना है** ।

- इस समझौते के अनुसार, यदि **मुद्रास्फीति लगातार तीन तमिहयों तक 2% से 6% की लक्ष्य के बाहर रहती है**, तो RBI को केंद्र सरकार को ररिपोर्ट देनी होगी, जिसमें कारण बताना होगा, सुधारात्मक कार्रवाई का प्रस्ताव देना होगा, तथा यह अनुमान लगाना होगा कि मुद्रास्फीति कब लक्ष्य सीमा पर वापस आएगी ।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक क्या है?

- **परचिय:** CPI दैनिक उपभोग के लिये घरों द्वारा आमतौर पर खरीदी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की खुदरा कीमतों में परवरितन को मापता है ।
 - इसका उपयोग मुद्रास्फीति पर नज़र रखने के लिये कथिा जाता है, CPI का आधार वर्ष 2012 है ।
- **उद्देश्य:** CPI मुद्रास्फीति का एक व्यापक रूप से परयुक्त **वृहद आर्थिक संकेतक** है, जिसका उपयोग सरकारों और **केंद्रीय बैंकों** द्वारा **मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण** और मूल्य स्थिरता नगरिनी के लिये तथा राष्ट्रीय खातों में **अपस्फीतिकारक के रूप में** कथिा जाता है ।
 - CPI का उपयोग **कीमतों में वृद्धि के लिये करमचारियों के महँगाई भतले** को अनुकरमति करने के लिये भी कथिा जाता है ।
 - CPI जीवन-यापन की लागत, **करय शक्ति** तथा वस्तुओं और सेवाओं की महँगाई को समझने में मदद करती है ।

उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक क्या है?

- CFFI मुद्रास्फीति को मापता है जो विशेष रूप से उपभोक्ता की टोकरी में खाद्य पदार्थों के मूल्य परवरितन पर केंद्रित होता है ।
- CFFI सामान्य रूप से उपभोग कथि जाने वाले खाद्य पदार्थों जैसे अनाज, सब्जियाँ, फल, डेयरी, माँस और अन्य प्रमुख वस्तुओं के मूल्य परवरितनों पर नज़र रखता है ।
 - CPI की तरह, CFFI की गणना मासिक आधार पर की जाती है, तथा वर्तमान में इसका आधार वर्ष 2012 माना जाता है ।
- **केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO)**, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय अखलि भारतीय आधार पर तीन श्रेणयियों (ग्रामीण, शहरी और संयुक्त) के लिये अलग-अलग CFFI जारी करता है ।

//

मुद्रास्फीति और इससे संबंधित पद

मुद्रास्फीति

- वस्तुओं/सेवाओं की कीमतों में वृद्धि; क्रय शक्ति में तदनुसार गिरावट
- रेंगती हुई मुद्रास्फीति (Creeping Inflation):** हल्की/मध्यम मुद्रास्फीति जहाँ मूल्य स्तर, एक निश्चित अवधि में लगातार कम दर (एकल अंकीय मुद्रास्फीति दर) पर बढ़ता है।
- कूदती हुई मुद्रास्फीति (Galloping Inflation):** यह तब होती है जब निम्न मुद्रास्फीति को नियंत्रित नहीं किया जाता है (मुद्रास्फीति दोहरे/तिहरे अंकों में - 20/100/200% वार्षिक)
- अति मुद्रास्फीति (Hyperinflation):** कीमतें सालाना मिलियन या यहाँ तक कि एक ट्रिलियन प्रतिशत तक बढ़ जाती हैं (1920 के दशक में जर्मनी में देखी गई)

कोर मुद्रास्फीति

- वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में परिवर्तन लेकिन खाद्य/ऊर्जा क्षेत्रों को छोड़कर (कीमतों में अस्थिरता के कारण)

हेडलाइन मुद्रास्फीति

- टोकरी में सभी वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन (खाद्य और ऊर्जा सहित)

कोर = हेडलाइन - खाद्य एवं ईंधन सामग्री

स्टैगफ्लेशन

- जब मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी और आर्थिक स्थिरता/मंदी एक साथ होती है; इस प्रकार की मुद्रास्फीति का प्रबंधन करना सबसे कठिन होता है
- 1970 के दशक (अमेरिका, ब्रिटेन) में विकसित देशों द्वारा इस स्थिति का सामना किया गया जब विश्व में तेल की कीमतें नाटकीय रूप से बढ़ीं

अपस्फीति

- मुद्रास्फीति का प्रतिलोम -** वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में निरंतर गिरावट
- यहाँ, वार्षिक मुद्रास्फीति दर 0% से नीचे गिर जाती है जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा के वास्तविक मूल्य में वृद्धि होती है (जापान को 1990 के दशक में लगभग एक दशक तक इसका सामना करना पड़ा)
- यह मंदी/अवसाद में तब्दील हो सकता है, इसलिए यह मुद्रास्फीति से भी अधिक खतरनाक है

अवस्फीति

- जब मुद्रास्फीति की दर कम हो जाती है
- इसका तात्पर्य यह है कि कीमतें प्रत्येक महीने के साथ धीमी गति से बढ़ रही हैं (मुद्रास्फीति हो रही है)

अपस्फीति कीमतों में गिरावट है, जबकि अवस्फीति मुद्रास्फीति दर में गिरावट है



मुद्रा संस्फीति

- आमतौर पर अपस्फीति का अनुसरण होता है
- नीति निर्माता मुद्रास्फीति (अधिक सरकारी खर्च, कम ब्याज दरें आदि) उत्पन्न करके आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

स्वयंप्लेशन

- इस स्थिति में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की विषमता देखने को मिलती है; कुछ क्षेत्रों को भारी मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की अनुपस्थिति देखने को मिलती है और कुछ क्षेत्रों को अपस्फीति का भी सामना करना पड़ रहा है

ग्रीडप्लेशन

- वह स्थिति जहाँ (कॉपीरेट) लालच मुद्रास्फीति को बढ़ावा देता है; कंपनियाँ लाभ को अधिकतम करने के लिए लागत से परे अपनी कीमतें बढ़ाती हैं

श्रृंकप्लेशन

- यह छिपी हुई मुद्रास्फीति का एक रूप है। इससे अक्सर ग्राहकों को निराशा/असंतोष होता है
- श्रृंकप्लेशन किसी उत्पाद के स्टिकर मूल्य को बनाए रखते हुए उसके आकार को कम करने की प्रवृत्ति है।



222222 222222 222222:

प्रश्न: भारतीय रज़िर्व बैंक की मौद्रिक नीति पर उच्च खुदरा मुद्रास्फीति के प्रभावों का परीक्षण कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

22222222222222

प्रश्न 1. भारतीय रज़िर्व बैंक द्वारा बैंक दर को कम करना _____ की ओर जाता है:(2011)

- बाज़ार में अधिक तरलता
- बाज़ार में कम तरलता
- बाज़ार में तरलता में कोई बदलाव नहीं

(d) वाणज्यिक बैंकों द्वारा अधिक जमा जुटाना

उत्तर: (a)

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2020)

1. खाद्य वस्तुओं का 'उपभोक्ता मूल्य सूचकांक' (CPI) भार (Wegitage) उनके 'थोक मूल्य सूचकांक' (WPI) में दिये गए भार से अधिक है।
2. WPI, सेवाओं के मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को नहीं पकड़ता, जैसा कि CPI करता है।
3. भारतीय रिज़र्व बैंक ने अब मुद्रास्फीति के मुख्य मान तथा प्रमुख नीतितर दलों के निर्धारण हेतु WPI को अपना लिया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

प्रश्न. यदि आर.बी.आई. प्रसारवादी मौद्रिक नीतिका अनुसरण करने का निर्णय लेता है, तो वह निम्नलिखित में से क्या नहीं करेगा? (2020)

1. वैधानिक तरलता को घटाकर उसे अनुकूलित करना
2. सीमांत स्थायी सुवधि दर को बढ़ाना
3. बैंक दर को घटाना तथा रेपो दर को भी घटाना

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)